ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 353-359

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

पर्यटन उद्योग की समस्यायें एवं सम्भावनायें तथा पर्यावरण : उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में

डॉ० डी० पी० एस रावत

एसो० प्रोफेसर– भूगोल विभाग, के० जी० के० (पी० जी०) कालेज, मुरादाबाद (उ०प्र०), भारत

Received- 15.11.2018, Revised- 18.11.2018, Accepted - 24.11.2018 E-mail: dpsrawat6@gmail.com

***सारांश :** उत्तराखण्ड भारत की देवभूमि प्रदेश है यहां पर्यटकों का स्वर्ग कहलाता है। इस क्षेत्र में अनेकों पर्यटन स्थल हैं जिनकी विविधता देखने योग्य है यहां पौराणिक स्थल और ऐतिहासिक स्थल है और प्राचीन गुफाएं, धार्मिक स्थल, प्राकृतिक रमणीय स्थल वन्य जीव अभ्यारण एवं राष्ट्रीय उद्यान अद्भुत और आर्कषक है जो यहां पर सभी प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। प्राचीन काल से ही ऋषि–मुनियों तथा शिव–पार्वती, नन्दा देवी, यमुना–गंगा एवं स्वयं भगवान विष्णु एवं हजारों देवी–देवताओं की तपस्थली रही है।*

यह भू–भाग प्राचीन भारतीय साहित्य में एक पवित्र भूमि रही है पौराणिक साहित्य में गढ़वाल क्षेत्र को केदारखण्ड एवं कुमायूं क्षेत्र को मानस खण्ड कहा गया है। पर्यटन वर्तमान समय का त्वरित उद्योग है जिससे उस क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक विकास का प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। इस प्रदेश में पर्यटकों को आकर्षित करने वाले प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक सौन्दर्य के सभी तत्व विद्यमान है। यथा पर्वत एवं पर्वत श्रृंखलाऐं, ढाल, उच्च शिखर, बुग्याल, क्षीलों, ताल विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियों से युक्त वन जीव–जन्तुओं की विशिष्ट हिमालयी जातियां ऐतिहासिक राष्ट्रीय उद्यान एवं पशु विहार, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व का स्थल, पवित्र नदियों के उद्गम एवं संगम, तीर्थस्थल, विभिन्न सामाजिक विशिष्टता की पहचान वाली जनजातियों तथा आधुनिक पर्यटन स्थल एवं स्वास्थवर्धक उत्तम जलवायु वाले स्थलों की भरपुरता मौजूद है। जो उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग के विकास के लिये असीम सम्भावनाऐं उपलब्ध कराती हैं।

कुंजीभूत शब्द– देवभूमि, पर्यटकों, विविधता, पौराणिक स्थल, ऐतिहासिक स्थल, प्राचीन गुफाएं, धार्मिक स्थल।

वर्तमान समय में पर्यटन न केवल मनोरंजन और मनोवैज्ञानिक सन्तुष्टि का माध्यम है वरन् यह एक महत्वपूर्ण उद्यम स्थापित हो चुका है। इसीलिये इसे धुंआ रहित उद्योग माना जाता है। इसके साथ ही इसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार की अपार सम्भावनाऐं हैं। वर्तमान समय में पर्यटन विष्व के सबसे बड़े उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। इसी क्रम के उत्तराण्ड राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत भी पर्यट नही है। पर्यटन उद्योग की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी पर्यटक है। पर्यटक ऐसे जनमानस को कहते हैं। जो किसी विशेष सैरगाह स्थल पर सैर–सपाटे, आनन्द, खेल, पर्वतारोहण, रिवर राफिटंग आदि के लिए जाते हैं इसी में उत्तराखण्ड एक धनी प्रदेश है। आज भी पर्यटन उद्योग के मार्ग में उत्पन्न अनेक विकासरोध क समस्याओं के कारण यह उद्योग न तो आधुनिक विकास कर सका और न क्षेत्रीय सामाजिक, आर्थिक विकास के अपने मुख्य लक्ष्यों को हासिल कर सका। यह उद्योग आज भी असन्तुलित, अनियोजित, सकेन्द्रित विकास के कारण अनेक पर्यावरणीय (प्राकृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण) प्रदूषण और असन्तुलित पारिस्थितकीय समस्याओं का पर्यावरणीय दुष्परिणामों की तरफ इंगित कर रहा है। इसीलिए उत्तराखण्ड क्षेत्र में पर्यटन का भौगोलिक विश्लेषण अधिक प्रासंगिक है प्रस्तुत शोध प्रपत्र में पर्यटन उद्योग की वर्तमान भौगोलिक स्थिति एवं सम्भावनाओं को उजागर करना और पर्यटन विकास और उसको प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना साथ ही पर्यावरणीय दुष्प्रभावों को न्यूनतम और सामाजिक आर्थिक प्रभावों को अधिकतम् करने हेतु एक रूपरेखा प्रस्तुत की है ताकि पर्यटन उद्योग का सन्तुलित विकास हो सके। ताकि स्थानीय जनमानस की सामाजिक आर्थिक जीवन स्तर को सुदृढ़ करना प्रमुख है। उत्तराखण्ड में यद्यपि पर्यटन का विकास हुआ है। लेकिन पर्यटन के लिए परिवहन तन्त्र, आवासीय सुविधायें, पर्यटन सर्किट का अभी विकास नहीं हुआ है। केवल धार्मिक पर्यटन ही अधिक विकसित हुआ है। विभिन्न अवस्थापना सुविधाओं का विकास करके क्षेत्र में प्राकृतिक पर्यटन, इको–पर्यटन, वन्यजीव अभ्यारण, शीतकालीन खेल, रिवर राफिटंग, झील राफिटंग का यथेचित विकास किया जा सकता है।

उत्तराखण्ड के गढ़वाल एवं कुमाऊँ मण्डल में साहसिक खेलों के लिए उपयुक्त स्थल

क्रमांक	साहसिक खेल का नाम	साहसिक खेलों हेतु उपयुक्त स्थल
1	पैराग्लाइडिंग	पिथौरागढ़, मुनस्यारी, धारचूला, [illegible], [illegible], भीमताल।
2	आइस हॉकी	मुनस्यारी, मिलम, औली, बद्रीनाथ, नीती व उत्तरकाशी।
3	आइस स्केटिंग	मुनस्यारी, मिलम, रानीखेत, नीती औली व [illegible]।
4	पर्वतारोहण	उत्तराखण्ड में स्थित समस्त पर्वत श्रेणियां।
5	रॉक क्लाइम्बिंग	नैनीताल, [illegible], पौड़ी, श्रीनगर, [illegible], [illegible], [illegible], पिथौरागढ़ आदि।
6	ट्रेकिंग	बद्रीनाथ, फूलघाटी, ग्वालदम, गैरसैण व नैनीताल।
7	नौकायन/ गोताखोरी व मछली पकड़ना	समस्त उत्तराखण्ड में स्थित नदियां व झीलें।
8	रिवर राफ्टिंग	उत्तराखण्ड में स्थित नदियाँ मुख्यतः गंगा, यमुना, काली नदी, [illegible]।

वास्तव में पर्यटन एक ऐसी मशीन है जिससे मानव प्राकृतिक सुन्दरता, संस्कृति एवं मानवीय सभ्यता का सही ज्ञान प्राप्त करता है पर्यटन वर्तमान में सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है यह अपने गुणक प्रभाव की क्षमता के कारण पर्यटन आज एक महत्वपूर्ण उद्योग माना जाता है। जिसमें एक बार निवेश करने पर सामाजिक–आर्थिक विकास के कई आयामों से अनवरत लाभ मिलता रहता है। राविन्सन ने पर्यटन के लिए उत्तरदायी भौगोलिक तथ्यों में भौगोलिक स्थिति, स्थानिक अर्न्तसम्बन्ध, दृश्य तत्व, जलवायु, वन्य जीवन, अधिवास और सांस्कृतिक तत्वों के रूप में रेखांकित किया है। इनमें सांस्कृतिक तत्व इतिहास और पुरातत्व से सम्बन्धित है। इसीलिए क्षेत्र विशेष में भौगोलिक और ऐतिहासिक तत्व पर्यटन उद्योग के लिए विशेष उत्तरदायी है।

वर्तमान समय में यह विश्व का सबसे बड़ा धुआं रहित उद्योग माना जा रहा है। यह आधुनिक पर्यटन 20वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण देन है। पर्यटन का सामान्य अर्थ विभिन्न क्षेत्रों का भौगोलिक भ्रमण से है। क्योंकि मानव का स्वभाव प्राचीन काल से ही नये क्षेत्रों को देखना एवं आंकलन करना तथा नये तथ्यों की खोज करना रहा है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार जब लोग 24 घण्टे से अधिक और एक वर्ष से कम अवधि के लिए अपने कार्यस्थल से बाहर निकलते हैं तो इस प्रकार की गतिविधि को पर्यटन कहा जाता है। बाद में इन्हीं पर्यटकों को आवष्यक तत्व जैसे परिवहन, स्थान, आवासीय स्थलों का निर्माण करके एक उद्योग स्थापित किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र– यह भारत का 27वां राज्य है जिसकी (भौगोलिक स्थिति 28 अक्षांष 43′ से 31 अक्षांष 27′ उत्तरी अक्षांश एवं 77 अक्षांश 34′ से 81 अक्षांश 02′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। राज्य का क्षेत्रफल 53,483 वर्ग किमी है। जिसमें पर्वतीय भाग 46,035 व मैदानी भाग 7448 वर्ग किमी है। उत्तर से दक्षिण का विस्तार 320 किमी0 एवं पूर्व से पश्चिम का विस्तार 358 किमी0 है। राज्य की सीमा से लग राज्य हिमाचल प्रदेश (पश्चिम में) उत्तर प्रदेश (दक्षिण पश्चिम में) पूर्व में नेपाल, उत्तर में तिब्बत (चीन) है। भारत की प्रमुख नदियां गंगा, यमुना, रामगंगा, अलकनन्दा के उद्‌गम स्थल भी यहां है। यहां पर कार्बेट नेशनल पार्क, राष्ट्रीय उद्यान गंगात्री (सबसे बड़ा) सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान फूलों की घाटी सबसे बड़ा वन्य जीव विहार केदारनाथ सर्वाधिक कस्तुरी मृगों वाला वन्य जीव विहार (अस्कोट वन्य जीव विहार पिथौरागढ़) है।

अध्ययन का उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखण्ड क्षेत्र में पर्यटन एवं पर्यटन उद्योग की सम्भावनाऐं एवं समस्याओं का अध्ययन से सम्बन्धित है। इसलिए इस अध्ययन में निम्नलिखित उद्‌देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1– अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन स्थलों की पहचान कर उनका विवरण प्रस्तुत करना।
2– विभिन्न क्षेत्रों में पर्यटन विकास के विभिन्न केन्दों की वर्तमान स्थिति/स्वरूप को बतलाना।
3– पर्यटन विकास की सम्भावनाओं को इंगित करना।
4– पर्यटन उद्योग विकास के लिए निजी भागीदारी किस प्रकार की होगी उसका विश्लेषण करना।
5– पर्यटन उद्योग से पर्यावरणीय समस्याओं को उजागर करना ।

परिकल्पनाएं –

1– उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा एवं सौन्दर्यता को देखते हुए पर्यटन का विकास मानव केन्द्रित नियोजन किया जाय तो यहां के स्थानीय निवासियों के लिए एक महत्वपूर्ण रोजगार एवं आर्थिक विकास के सही विकल्प के रूप में उभर सकता है।
2– पर्यटन विकास से स्थानीय उत्पाद बाजारोन्मुख हो जाते हैं।
3– पर्यटन विकास से धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों का विकास होता है।
4– वर्तमान उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग के स्वरूप एवं सम्भावनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है अगर पर्यटन में आवश्यक मूलभूत सुविधाएं बढ़ायी जाय तो सकेन्द्रित पर्यटन के स्थान पर विकेन्द्रित पर्यटन को अपनाया जाय तो प्रदेश की सामाजिक एवं आर्थिक विकास की स्थिति सुदृढ़ की जा सकती है।
5– उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग का विकास विकेन्द्रित किया जाय तो क्षेत्रीय सामाजिक एवं आर्थिक विषमता को काफी कम किया जा सकता है।
6– उत्तराखण्ड में जहां पर पर्यटन का अनियोजित विकास किया गया है वहां पर प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण प्रदूषण की समस्यायें बढ़ रही हैं। पश्चात्य जीवन शैली के अनुकूल उन स्थानों पर नगरीकरण तीव्र गति से बढ़ा है वहां की सांस्कृतिक पहचान धीरे–धीरे समाप्त हो रही है।

इसलिये पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास यहां की सांस्कृतिक विरासत/धरोहर के सम्बर्धन एवं संरक्षण तथा नियोजित और स्थाही पर्यटन विकास से ही पर्यावरण सन्तुलन बनाएं रखने में सहायक होगा।

आंकड़ा स्त्रोत – प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है।

प्राथमिक आंकड– उत्तराखण्ड क्षेत्र के प्रमुख पर्यटक केन्द्र शामिल है।

द्वितीयक आंकड़े– वार्शिक पर्यटन सांख्यिकी डायरी देहरादून, उत्तराखण्ड।

आवश्यक तत्व– पर्यटन उद्योग के पर्यटन स्थल एवं पर्यटक दो महत्वपूर्ण तत्व होते है। पर्यटन उद्योग के लिये अन्य आवश्यक तत्व निम्नवत् है।

1– परिवहन, 2– स्थान, 3– आवासीय प्रतिरूप

पर्यटन उद्योग के विकास के कारण – पर्यटन उद्योग आज विश्व का एक विकसित उद्योग बन गया है तथा जिन देशों में बुनियादी सुविधाएं मूलतः सुदृढ़ है वह उन देशों की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसके निकास के लिए निम्नवत् कारण है–

1– यातायात के साधनों में वृद्धि, 2– औद्योगिक विकास, 3– नगरीकरण, 4– जीवन स्तर में अभिवृद्धि, 5– शिक्षा में विशेषीकरण

उत्तराखण्ड में पर्यटन विकास के आवश्यक तत्व– उत्तराखण्ड क्षेत्र आदिकाल से ही धार्मिक आकर्षण का केन्द्र रहा है। यह भू–भाग महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों एवं सुदृण प्राकृतिक जलवायु दृश्यों से भरा भाग है। उच्च मध्य एवं निम्न पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यटन महत्वपूर्ण मानव गतिविधि वाला है। पर्यटन विकास के लिए निम्न प्रकार के तत्व उत्तरदायी हैं।

1– दर्शनीय तत्व की भौगोलिक स्थिति और अधिगम्यता

2– स्थानिक अर्न्तसम्बन्ध

3– भू–दृश्य तत्व – यू एवं वी आकार की घाटियां।

पर्वत श्रृखलाएं, नदीतन्त्र, झीले, जल–प्रपात, हिमानियों, प्राकृतिक वनस्पतियां, बन, सुन्दर–सुन्दर बुग्याल राष्ट्रीय उद्यान प्रसिद्ध कुण्ड, ताल, सरोवर, राष्ट्रीय पार्क इत्यादि।

4– जलवायु – सार्वभौमिक जलवायु क्षेत्र इसमें तापमान, वर्षा, बर्फाच्छादन।

5– अधिवासीय विशेषताऐ– प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगर उनके अवशेष, स्मारक, पुरातात्विक स्थल।

6– सांस्कृतिक तत्व – स्थानीय परम्परायें, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक कला, धर्म, स्थानीय हस्तशिल्प इत्यादि।

उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य जीव विहार

क्र0सं0	उद्यान/वन्य जीव विहार का नाम	स्थापना व र्ष	क्षेत्रफल वर्ग किमी0	स्थित/जनपद
1	नन्दा देवी जीव आरक्षित क्षेत्र	1988	5860.69	चमोली, पिथौरागढ़, बागे वर
2	जिम कार्बेट ने नल उद्यान	1936	520.82	पौड़ी गढ़वाल, नैनीताल
3	गोविन्द रा ट्रीय उद्यान	1980	472.00	उत्तरका ी
4	फूलों की घाटी	1982	87.50	चमोली
5	नन्दा देवी रा ट्रीय उद्यान	1982	630.00	चमोली
6	राजाजी रा ट्रीय उद्यान	1983	820.42	देहरादून, पौड़ी गढ़वाल, हरिद्वार
7	गंगोत्री रा ट्रीय उद्यान	1989	1452.00	उत्तरका ी
8	गोविन्द वन्य जीव विहार	1955	953.97	उत्तरका ी
9	केदारनाथ वन्य जीव विहार	1972	957.00	चमोली, रूद्रप्रयाग
10	अस्कोट वन्य जीव विहार	1986	600.00	पिथौरागढ़
11	सोना नदी वन्य जीव विहार	1987	301.00	पौड़ी गढ़वाल
12	बिन्सर वन्य जीव विहार	1988	46.00	अल्मोड़ा
13	बिनागें माउन्टेन क्लेब वन्य जीव विहार	1993	338.74	देहरादून

स्त्रोत – उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद एवं वन विभाग

प्राचीन काल से यह क्षेत्र ठण्डी जलवायु, सुहावना मौसम, प्राकृतिक सौन्दर्य जैसे नदी, जलाशय, झीलें, घाटियाँ, पर्वत श्रृंखलायें, हिमानियों, दुर्लभ जड़ी–बूटियां, हिमाच्छादित श्वेत शिखरों इत्यादि का आनन्द लेने के लिए बर्फ से ढकी ढलानों पर स्कीइंग खेल, पर्वतारोहण एवं रीवर राटिंग जैसे विशेष खेलों के लिए लोग आकर्षित होते रहे हैं। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, जोशीमठ, पंचकेदार, पंचबद्री, ऋषिकेश, हरिद्वार, रीठा साहिब, पूर्णागिरी, नन्दा देवी, गोल्यू महाराज कटारमल (कोसी) इत्यादि धार्मिक आस्था के केन्द्रों पर हजारों वर्षों से पर्यटक आते रहे हैं। दूसरी तरफ मंसूरी, नैनीताल, चकराता, पौड़ी लैंसडाउन, पिथौरागढ़, कौसानी, भवाली, भीमताल आदि स्वास्थ्यवर्धक एवं मनोरम पर्वतीय नगर पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं। गंगोत्री, पिण्डारी, मिलम ग्लेशियर तिब्बत से सटे होने के कारण आदि काल से व्यापार का क्षेत्र रहा है।

पर्यटन केन्द्रों का भौगोलिक स्वरूप– उत्तराखण्ड क्षेत्र में पर्यटन केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप के अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि इस क्षेत्र की विशेष भौगोलिक स्थितियां पर्यटन केन्द्रों को स्थापित करने में रही है। उत्तराखण्ड की नदी अपवाह प्रणालियों को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि उच्चावचीय विषमताओं वाले इस क्षेत्र में नदियों के किनारे ही आवागमन हेतु सड़कों का निर्माण हुआ है।

इस दृष्टि से स्पष्ट है कि अत्यन्त प्राचीनकाल से ही अब तक यातायात मार्ग का विकास क्रम नदी घाटियों क्षेत्रों के सहारे ही हुआ है। इसी स्थलीय मार्गों पर गमनागमन होने के कारण स्थान–स्थान पर विश्राम स्थल विकसित हुए तथा कालान्तर में यहां पर उन्हीं केन्द्रों को पर्यटन केन्द्र के रूप में आधुनिक विकास हुआ है। हिमालयी क्षेत्रों में निवास करने वाली भोटिया जनजाति इस रास्ते के सहारे तिब्बत से व्यापार किया करते रहे हैं। ऋषियों, मुनियों द्वारा आध्यात्मिक साधना हेतु इसी मार्ग का सहारा लिया गया है। इसके बाद धार्मिक पर्यटकों के आवागमन में वृद्धि के फलस्वरूप नदी घाटियों में ही अनेक धर्म के प्रतीकों की स्थापना हुई जो बाद में धार्मिक पर्यटन के केन्द्र बनते गये। इस क्रम के बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमनोत्री, गंगोत्री प्रमुख है जिनका मार्ग नदी के किनारे से होकर गुजरता है। ब्रिटिश काल में विश्राम के रूप में अनेक पर्वतीय केन्द्रों की स्थापना हुई जो आज महत्वपूर्ण पर्यटक केन्द्र है इनमें मंसूरी, नैनीताल, कौसानी, लैंसडाऊन, पौड़ी भीमताल, पिथौरागढ़ इत्यादि इन केन्द्रों का विकास नदी घाटियों के सहारे परिवहन मार्ग के सहारे ही हुआ है। उत्तराखण्ड में पर्यटन केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास के निम्न कारण माने जा सकते हैं।

I S S N N O . - 2 3 4 7 - 2 9 4 4
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

1— सम्पूर्ण उत्तराखण्ड क्षेत्र का प्राकृतिक सौन्दर्य

2— नदी घाटियों के सहारे विकसित परिवहन मार्ग

3— अनेक नदी बेसिन में स्थित धार्मिक पर्यटन केन्द्रों की स्थापना के कारण आधुनिकत्तम विश्राम केन्द्रों की स्थापना एवं होटल व्यवसाय।

4— नदी घाटियों क्षेत्र में जनसंख्या का केन्द्रीकरण एवं अर्थतन्त्र विकसित होने से नये—नये स्थलों का आधुनिक विकास और उसका फैलाव।

5— ब्रिटिश शासन काल में पर्वतीय विश्राम केन्द्रों की स्थापना का आधुनिक विकास एवं उसका फैलाव।

6— प्राचीनतम् काल से ऋषियों, मुनियों की तपोभूमि पर जगह—जगह धार्मिक प्रतीकों की स्थापना।

7— विभिन्न स्थानों पर पर्वतारोहण प्रशिक्षण केन्द्र, शीतकालीन बर्फ के खेलों, रिवर राटिंग का आधुनिक सुविधाओं युक्त संसाधनों केन्द्रों का विकास।

तालिका —2

उत्तराखण्ड पर्यटन केन्द्रों के प्रकार

क्र0स0	पर्यटन का स्वरूप	पर्यटन केन्द्र का नाम
1	धार्मिक पर्यटन के केन्द्र	बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री, गोमुख, हेमकुण्ड साहिब, रीठा साहिब, गोविन्दघाट, वि णु प्रयाग, जो ीमठ, रूपकुण्ड, नंद प्रयाग, कर्णप्रयाग, अनुसूइया मन्दिर, रूद्रप्रयाग, अगस्त्यमुनि, त्रिजुगीनारायण, गुप्तका ी, गौरीकुण्ड, ऊखीमठ, तुंगनाथ, कालीमठ, सप्तऋ ि कुण्ड, उत्तरका ी, पुरोला, बिन्सर, ज्वालादेवी, ताड़केदार महादेव, कण्वाश्रम, देवप्रयाग, श्रीनगर, चन्द्रबदनी, लक्ष्मणसिद्ध मन्दिर, टपके वर, मां सुरकण्डा देवी, मां चन्द्रबदनी, कुंजापुरी, ऋ िके ा, हरिद्वार, नीलकण्ठ, मन्सादेवी, चण्डी देवी, ाान्तिकुंज, भारतमाता, पाताल देवी, नन्दादेवी मन्दिर, गोलू मन्दिर, झूला देवी मन्दिर, रानीखेत, जागे वर धाम, बिन्सर महादेव, कटारमल सूर्य मन्दिर, बैजनाथ धाम, नागनाथ, बाल सुन्दरी का ीपुर, नानकमत्ता साहिब, पूर्णागिरी मन्दिर, पंचे वर, गर्जिया देवी, कैंची धाम, मुक्ते वर मन्दिर, बेरीनाग, पाताल भुवने वर, नारायण स्वामी आश्रम,
2	प्राकृतिक पर्यटन केन्द्र	फूलों की घाटी, नन्दा देवी रा ट्रीय उद्यान, ह िल, हर की दून, सहत्रताल, पंवालीकाण, खिर्सू, पौड़ी, लैंसडाउन, चीला वन्य अभयारण्य, मोतीचूर, राजाजी रा ट्रीय उद्यान, केदारनाथ वन्य जीव अभ्यारण्य सहस्त्रधारा, मंसूरी, चकराता, कैम्पटीफाल, धनोल्टी, उत्तरका ी, भटवाड़ी, नई टिहरी, चम्बा, चिरबटिया, नैनीताल, लोहाघाट, मुनस्यारी, कौसानी, अल्मोड़ा, चम्पावत, पिथौरागढ़ दयारा बुग्याल।
3	ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्र	कालसी, लाखामण्डल, बौद्धमहास्तूप, नरेन्द्रनगर, प्रतापनगर, द्वाराहाट, चौखुटिया, चम्पावत।
4	साहसिक पर्यटक स्थल	औली, ि ावपुरी, आसन, बैराज, पुरानी टिहरी नगर, चोपता, मुनस्यारी, डीडीहाट, सहस्त्रधारा।

नदी घाटी पर्यटन केन्द्र— अध्ययन में नदी घाटी पर्यटन केन्द्र इस प्रकार से है।

भागीरथी नदी — गोमुख, गगोत्री, हर्षिल, मुखवा, गंगनाली, भटवाड़ी, उत्तरकाशी, चिन्यालीसौड़, चम्बा, नई टिहरी।

मंदाकनी नदी— केदारनाथ, गौराकुण्ड, गुप्तकाशी, कालीमठ, ऊखीमठ, मद्मेश्वर, कोटमहेश्वर, रूद्रप्रयाग, अगस्तमुनि, जखोली, तिलबाड़ा।

यमुना नदी— राजगढ़ी, पुरोला, हर की दून, गोविन्द राष्ट्रीय उद्यान, यमनोत्री, सप्तकुण्ड, लाखामण्डल, कालसी, त्यूणी, आसन बेराज, पौंटा साहिब।

गंगा नदी — देव प्रयाग, शिवपुरी, व्यासघाट, ऋषिकेश मुनि की रेती, लक्ष्मण झूला, राम झूला, हरिद्वार, शान्तिकुन्ज, भारत माता मन्दिर।

रामगंगा — चौखुटिया, भैत रोजरवान, स्याल्दे, रामनगर।

काली नदी — पिथौरागढ़, मुनस्यारी, धारचूला, डीडीहाट, चम्पावत, लोहाघाट।

कोसी नदी— कौसानी, बागेश्वर गरूढ।

पर्वतीय पर्यटन केन्द्र — यहां पर्यटन केन्द्र भी नदीयों के सहारे ही आधुनिक रूप से विकसित हो रहे हैं—

हेमकुण्ड साहिब, रूद्रनाथ, फूलों की घाटी, औली, गोपेश्वर, चमोली, जोशीमठ, पीपलकोटी, घनोल्टी, चन्द्रबदनी, नीलकुण्ठ, लैंसडाउन, पौड़ी, खिर्सू, मंसूरी, लोहाघाट, चम्पावत, अल्मोड़ा, नैनीताल, देहरादून, कौसानी, बागेश्वर, गैरसैंण।

उत्तराखण्ड में पर्यटक सुविधाएं तथा पर्यटकों की संख्या 2016—2017

क्र0स0	मद	इकाई	विवरण
(क)	पर्यटक सुविधायें		
1	पर्यटन स्थल	संख्या	327
2.	पर्यटक आवास गृह	"	176
3.	रैन बसेरा	"	32
4.	पर्यटक आवास गृहो में उपलब्ध ाय्यायें	"	6164
5.	रैन बसेरा में उपलब्ध ाय्यायें	"	1560
6.	होटल तथा पेइंग गेस्ट हाऊस	"	4813
7.	धर्म ाालायें	"	886
(ख)	पर्यटकों के आंकड़े		
1	पर्यटकों की संख्या (तीर्थयात्रियों सहित)	लाखसंख्या	317.17
	(1) भारतीय पर्यटक	"	316.44
	(2) विदे ी पर्यटक	"	1.13
2	महत्वपूर्ण रा ट्रीय उद्यानों में आये कुल पर्यटक		
	(1) भारतीय पर्यटक	संख्या	374575
	(2) विदे ी पर्यटक		11685

स्त्रोत — उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद तथा वन विभाग उत्तराखण्ड।

पर्यटन और पर्यावरण— पर्यावरण प्रकृति एवं मानव निर्मित परिवेश और इसके सामाजिक—आर्थिक पक्ष के अलावा जीवमण्डल तथा उसके पारिस्थितिक तन्त्रों जिसका वह संगठित होता है उन सबको परिवेषित करना है। पर्यटन प्राकृतिक एवं मानवीय वातावरण पर अधिक निर्भर करता है। तथा जिसकी मनोरंजन प्रदान करने की महत्ता यात्रा कुशल प्रबन्धन पर निर्भर नही करता है। बल्कि उसमें पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह प्रभाव जहां पर्यावरण के भौतिक तत्वों को स्पष्ट प्रभावित करता है वही इसका सीधा प्रभाव सामाजिक, आर्थिक पर स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। पर्यटन उद्योग में पर्यावरणीय प्रभावों का भौतिक अध्ययन

PIF/3.007 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

किया जाता है।

विगत 02 दशकों से उत्तराखण्ड में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि से पारिस्थितिकीय समस्याओं में वृद्धि हुई है इसके फलस्वरूप वन–विनाश, भूस्खलन, जलवायु परिवर्तन, अन्धाधुंध निर्माण कार्य, जन संकुचन, बाढ़, कचरे में वृद्धि एवं दुर्गन्ध आदि है। यहां पर पर्यटन विकास के लिये आधारभूत संरचनाओं का विकास के फलस्वरूप वनस्पतियों एवं जीव–जन्तुओं के जीवन तन्त्र के लिये विनाशकारी साबित हो रहा है। सड़क मार्गों एवं परिवहन साधनों की बढ़ती संख्या से उत्पन्न वायु एवं ध्वनि प्रदूषण से स्थानीय वनस्पति एवं जीव–जन्तु के जीवन–चक्र, विविधता तथ्य उनकी जीवन शैली में बदलाव हो रहे हैं नौकायन, एवं रिवर राटिंग क्षेत्रों में कूड़े–कचरे में ढेर मिल रहे हैं जिससे जलीय जीव–जन्तुओं पर सीधा असर हो रहा है। पर्यटन से सामाजिक सांस्कृतिक प्रभावों से जनसंख्या की संरचनात्मक, व्यावसायिक बदलाव स्पश्ट देखा जा सकता है। जिससे स्थानीय लोककला एवं परम्परागत व्यवसाय भी विलुप्त होता है।

इससे स्थानीय कलाओं, संस्कृति भी प्रभावित है। इन स्थानीय समाजों में मादक–द्रव्यों, चोरी, लूटपाट इत्यादि कुप्रभाव उभरे हैं। साथ ही पर्यटन विकास से परम्परागत कृषि, जीवन शैली, सांस्कृतिक विशेषताएं, खानपान, वेश–भूषा आदि का भी नष्ट कर पश्चिमीकरण की छाप दिख रही है।

पर्यटन उद्योग से सम्बन्धित समस्यायें – उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग के विकास मार्ग में आज भी बहुत से मूलभूत समस्यायें– पर्यावरण, आवागमन, सामाजिक, जनांकिकीय, आवासीय इत्यादि।

1– पर्यावरणीय समस्यायें – उत्तराखण्ड में पर्यटन स्थानीय निवासियों एवं सरकार के लिये लाभप्रद है। पर्यटन के घढ़ता–बढ़ता है। इससे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के रोजगार में वृद्धि होती है। पर्यटन उद्योग की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण का अवनयन हुआ है। सड़के, होटल, हवाई पट्टियां, रैनबसेरा बनाने में प्रकृति से छेड़छाड़ की गयी हजारों–हजार पर्यटक पर्वतां, जंगलों, नदियों, ऐतिहासिक, पौराणिक स्थलों पर जाते हैं तथा कुछ न कुछ वहां अपशिष्ट छोड़ जाते हैं। अधिक पर्यटन आने से यातायात की अधिक व्यवस्था के फलस्वरूप वायु प्रदूषण होता है। इससे सुन्दर, रमणिक स्थलों में परिवर्तन आ रहा है। पर्यटकों के लिये होटलों, रैनबसेरा, रेस्टोरेन्ट या क्रीड़ा स्थल तथा सड़क बनाने पर भू–आकृति में स्पष्ट परिवर्तन होता दिख रहा है। पर्यटकों के लिये होटलों में गर्म पानी की व्यवस्था तापने एवं भोजन बनाने के लिए जंगल कट रहे हैं। परिणाम स्वरूप पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। उत्तराखण्ड क्षेत्र में बढ़ रहे पर्यटन से अनेक पर्यावरणीय समस्याये उत्पन्न हो रही है– भूस्खलन, मृदा अपरदन, बाढ़े कचरे का ढेर, वनों का कटाव, जल एवं मृदा प्रदूषण, प्राकृतिक सुन्दरता का लुप्त होना आदि।

2– आवागमन की आधारभूत समस्यायें – उत्तराखण्ड में आग भी आवागमन की समस्या प्रमुख समस्या है। अधिकाश क्षेत्रों में स्थल परिवहन का विकास नदी घाटियों के सहारे ही हुआ है। ये नदियां 2000 से 2500 फी की गहराई खाईयों से प्रभावित हो रही है, इनके किनारे–किनारे ऊंचे–ऊंचे पहाड़ हैं जहां हमेशा खतरा बना रहता है। अभी भी अधिकांश जगह पर परिवहन मार्ग का अभाव है हेमकुण्ड साहिब, फूलों की घाटी, गोमुख, मणिकनाथ इत्यादि। जबकि अन्य जगहों पर साहसी एवं कुशल पर्यटक ही अपनी यात्राएं करते हैं। उत्तराखण्ड प्रदेश नवीनतम् भू–आकृतियों का क्षेत्र है बरसाती सीजन में सड़कें प्रायः भूस्खलन एवं टूटने से बन्द हो जाती है जिससे पर्यटकों को कई दिनों तक एक ही स्थान पर रूकना पड जाता है।

आवासीय समस्यायें – उत्तराखण्ड में गर्मी के मौसम में देश–विदेशों से भारी संख्या में पर्यटक यहां पर अपने से अधिक भीड़ होती है, जिससे अव्यवस्था फैल जाती है। जिससे लोगों को खुले आसमान के नीचे सोना पड़ता है एवं मंसूरी, नैनीताल, हल्द्वानी, लैंसडाउन, देहरादून इत्यादि स्थानों पर होटल गर्मी के सीजन में बहुत महंगे मिलते हैं। उत्तराखण्ड के औली, हेमकुण्ड साहिब, गोमुख क्षेत्र, धारचूला, कौसानी मुनस्यारी क्षेत्रों में आवासों का पूर्णतयां अभाव रहता है।

सामाजिक समस्यायें – जनसंख्या के असमान वितरण तथा कम जनघनत्व के कारण बहुत से पर्यटक स्थलों का समुचित विकास नही हुआ है। जबकि बहुत जगहों पर लोगों का पलायन हो रहा है। इससे स्थानीय रमणिक स्थलों का समुचित उपयोग नहीं हो रहा है।

उत्तराखण्ड में जनपदस्तरीय पर्यटन केन्द्र

क्र0सं0	जनपद का नाम	पर्यटन केन्द्र
1	उत्तरकाशी	उत्तरकाशी, गंगोत्री, गोमुख, यमनोत्री, गोविन्द घाट, हर्षिल, गंगनानी, हर की दून, सप्तकुण्ड।
2	चमोली	बद्रीनाथ, फूलों की घाटी, नन्दा देवी, हेमकुण्ड साहिब, विष्णु नन्द, कर्णप्रयाग, रूपकुण्ड, सतोपन्थ।
3	पौड़ी गढ़वाल	पौड़ी, श्रीनगर, लैंसडाउन, खिर्सू, चीला वन्य जीव अभ्यारण, राम लक्ष्मण झूला, बिनसर, कण्वाश्रम।
4	टिहरी गढ़वाल	देवप्रयाग, धनोल्टी, माँ सुरकण्डा देवी, कैम्पटीफाल, कुंजापुरी, पवालीकांठा, चन्द्रबदनी।
5	देहरादून	कालसी का शिलालेख, बौद्ध महास्तूप, सहस्त्रधारा, मंसूरी, टपकेश्वर, ऋषिकेश, मोतीचूर व ट्रीम पार्क
6	रूद्रप्रयाग	रूद्रप्रयाग, अगस्तमुनि, केदारनाथ, गौरीकुण्ड, मदमहेश्वर, त्रियुगीनारायण, तुंगनाथ, ऊखीमठ
7	हरिद्वार	हर की पैड़ी, कुशावर्त, गऊघाट, मंसा देवी, भारत माता का मन्दिर, चण्डी देवी।
8	नैनीताल	नैनीताल, भीमताल, हनुमानगढ़ी, भवाली, काठगोदाम, [illegible], खुरपाताल, नौकुचियाताल, रामगढ़, मुक्तेश्वर।
9	उधमसिंह नगर	उधमसिंह नगर, नानकमत्ता, काशीपुर, गिरी सरोवर, जसपुर।
10	अल्मोड़ा	गोलू देवता, जागेश्वर, द्रोणागिरि, कटारमल, सूर्य मन्दिर।
11	बागेश्वर	बागेश्वर, बैजनाथ धाम, कांडा, पिण्डारी ग्लेशियर ट्रैक, पाण्डु।
12	चम्पावत	लोहाघाट, पूर्णागिरि, ग्वाल देवता, बालेश्वर मन्दिर, रीठा साहब, पंचेश्वर, मायावती आश्रम, चम्पावत।
13	पिथौरागढ़	पाताल भुवनेश्वर, नारायण आश्रम, मुनस्यारी, झूलाघाट, अस्कोट, डीडीहाट।

स्त्रोत – उत्तराखण्ड पर्यटन डायरी

उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग की सम्भावनाऐं

PIF/3.007 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

– उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग विकास की भरपूर सम्भावनाऐं तथा अनुकूल भौगोलिक दशायें विद्यमान है। यह क्षेत्र आज भी नैसर्गिक सौन्दर्य से सुशोभित, मनमोहक रोमांचकारी व साहसिक पर्यटन स्थलों से धार्मिक पर्यटन स्थल के कारण पर्यटन क्षेत्र के रूप में अपार सम्भावनाएं हैं। उत्तराखण्ड हिमालय को जैव–मण्डल आरक्षित क्षेत्र भी कहा जा सकता है। उत्तराखण्ड में नन्दा देवी जैव मण्डल, फूलों की घाटी, गंगोत्री, केदारनाथ जैव मण्डल गोविन्द राष्ट्रीय उद्यान इत्यादि क्षेत्र का आरक्षित क्षेत्र बनाये जाने से तुंगनाथ, रूद्रनाथ, कल्पेश्वर, मदमहेश्वर, विष्णुप्रयाग, नदी, भविष्य बद्री, योग बद्री, वृक्षबद्री, सहस्त्रताल, पंवालीकांठा, नचिकेताताल, रूपकुण्ड, नैनीताल, सातताल, खुरपाताल, भीमताल, आदि क्षेत्रों को पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किये जा सकते हैं साथ ही स्थानीय देवी–देवताओं के स्थलों पर सुन्दर एवं आकर्षण मन्दिरों का निर्माण करने से पर्यटन की अपार सम्भावनाऐं विद्यमान है।

पर्यटन उद्योग विकास के सुझाव – उत्तराखण्ड में पर्यटन विकास के समाधान हेतु रचनात्मक तथा नियोजन उपायों की आवश्यकता है।

1– वर्तमान पर्यटक स्थलों का विकास आधुनिकीकरण के लिये स्थानीय संसाधनों एवं ज्ञान के आधार पर नियोजन किया जाना चाहिए ताकि पर्यटकों को आकर्षित कर सकें।

2– प्रमुख पर्यटक स्थलों पर दबाब कम करने के लिये नये–नये पर्यटक स्ललों को विकसित करने की नितान्त आवश्यकता है। इससे इससे जहां क्षेत्रीय पर्यटक स्थलों का समुचित विकास से क्षेत्रीय सामाजिक और आर्थिक विशमता को कम करके पारिस्थितकीय सन्तुलन को बनाए रखने में मदद मिलेगी।

3– उत्तराखण्ड पर्यटन उद्योग के स्थायित्व तथा संसाधनों के भरपूर दोहन को सुनिष्चित करने के लिए पर्यावरण संरक्षण के उपाय योजनाएं बनाई जानी चाहिए जिससे पारिस्थितकीय असन्तुलन न हो।

4– उत्तराखण्ड में पर्यटन के लिये ईको टूरिजम एवं पर्यटन विपेज को विकसित किये जाने की आवश्यकता है जो गांव खाली है उन्हें दुबारा पुर्नजीवित किया जाय ताकि वहां सुन्दर–सुन्दर पर्यटक आवास बनाये जाने चाहिए। इनमें स्थानीय खेलकूल, लोकगीतों, लोकनृत्यों एवं परम्पराओं से सम्बन्धी केन्द्र विकसित किये जा सकते है। ताकि पर्यटक अधिक दिनों तक रूक सकें।

5– पर्यटन उद्योग के लिये निजी क्षेत्रों की भागीदारी बहुत आवश्यक है इसमें रिवर राटिंग, वाटर गेम, स्नोगेम इत्यादि।

6– विभिन्न सेवा विभागों एवं उत्तराखण्ड पर्यटन परिशद के मध्य समन्वय स्थापित किया जाय ताकि पर्यटन के नये–नये आयामों पर विचार करके पर्यटकों को आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध की जा सके।

7– पर्यटन विकास कार्यक्रमों के संचालन में स्थानीय भागीदारी सुनिश्चित हो ताकि स्थानीय खेल, त्यौहार, सांस्कृतिक मेले, धार्मिक मेलों का सफल आयोजन हो।

8– हिमालय क्षेत्रों ऑल वेदर रोड़ बनायी जानी चाहिए ताकि बारामासी पर्यटक आ जा सकें।

9– उत्तराखण्ड में साहसिक पर्यटन की सम्भावनाओं को देखते हुए उचित प्रशिक्षण एवं संस्थान खोले जाने चाहिए।

10– ईको टूरिजम, टूरिस्ट विलेज बनाया जाय ताकि पयटक गावं में रहकर गांवों की अर्थव्यवस्था मजबूत हो सके।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नाकिंत निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

1– उत्तराखण्ड क्षेत्र में प्राकृतिक भू–दृष्यवाली पर्यटन के दृष्टिकोण के आधार पर कार्य करती है। इसमें नदी घाटियों, जलप्रपात, बुग्याल, पहाड़ी चोटियों, ताल, सरोवर, प्राकृतिक वन आदि पर्यटक उत्पाद के रूप में विद्यमान हैं। इनके विकास की पर्याप्त सम्भावनायें हैं।

2– उत्तराखण्ड क्षेत्र में पर्यटन का विकास धार्मिक यात्राओं, विभिन्न देवी–देवताओं की जात यात्रा के रूप में हुआ है। इससे देश –विदेश के यात्रीगण विभिन्न धार्मिक केन्द्रों की यात्रा करते हैं। जो आज पर्यटन के आधार हैं।

3– उत्तराखण्ड में अनेक उच्च पर्वत श्रृंखलायें एवं पर्वत हैं। जो पर्वतारोहियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

4– परम्परागत एवं धार्मिक पर्यटन का आधुनिक विकास आजादी से पूर्व से चला आ रहा है। अंग्रेजों ने अनेक हिल स्टेशनों एवं हिल रिसोर्ट की स्थापना की है। जिससे वहां पर आधुनिक विकास किया जा रहा है। जिससे वर्तमान पर्यटन विकसित हुआ है।

5– उत्तराखण्ड में पर्यटन केन्द्रों एवं वितरण और प्रकारों का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि पर्यटन केन्द्रों के वितरण में नदी घाटियों ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। उत्तराखण्ड उच्चावरणीय विषमताओं वाले इस क्षेत्र में नदियों के किनारे ही आवागमन सम्भव हो सकता है। इन नदी घाटियों में ही परिवहन मार्ग, मानव अधिवास और जनसंख्या का संकेन्द्रण मिलता है। इन्हीं क्षेत्रों में धार्मिक स्थल की स्थापना की गई है। अधिकांश धार्मिक पर्यटन केन्द्र इन्ही भागों में है।

6– उत्तराखण्ड में पर्यटन की संरचना और प्रकृति के अनुसार यह स्पष्ट है कि यहां धार्मिक पर्यटन की प्रधानता है। यहां पर 85 प्रतिशत से अधिक धार्मिक पर्यटन केन्द्र है। तथा जो पर्यटक आते हैं उनके धार्मिक प्रवृत्ति के यात्रियों की संख्या अधिक रहती है।

7– ब्रिटिशकालीन पर्यटक स्थल में आज भी आधुनिक केन्द्र हैं जिनमें मसूंरी, नैनीताल, भीमताल, लैंसडाउन, पौड़ी कौसानी

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

प्रमुख हैं।

8– उत्तराखण्ड पर्यटन एवं विकास परिषद नये–नये पर्यटन स्थलों एवं ईको–टूरिजम, टूरिस्ट बिलेज बनाने जा रहा है ताकि देश–विदेश के पर्यटक आ सकें।

9– उत्तराखण्ड की सरकार एवं निजी संस्थायें अब रिवर राटिंग, झील, नौकायन एवं शीत कालीन क्रीड़ा पर्यटन योजनाएं बना रही है। जिसका प्रचार एवं प्रसारित करके लोगों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bhatia A.K. (1978) Touris in India History and Development Sterring Publisation ltd. New Delhi.
2. Bahaikhanduri S.C. (1980) Garhwal Toursim Recreation Research Ashok Nagar, Lucknow.
3. Bam Ford, C.G. & Robinson, H.A. (1978) The Geography of Tourism Macdonald and Evams.
4. Bhardwaj. S.M. (1973) Hindu Pilgrimage in India Prentice Hall of India, Pvt, Ltd. New Delhi.
5. Dattar, B.K. (1961) Himalya Pilgrimage Publication divesion New Delhi.
6. Sharma V.A. (1977) A window of Garhwal the Himalya.
7. सांख्यिकी डायरी उत्तराखण्ड : अर्थ एवं संख्या निदेशालय नियोजन विभाग, उत्तराखण्ड, देहरादून।

*****